राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ अनुसंधान संस्थान, परेल, मुंबई

(भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद) एवं

बृहन्मुंबई महानगर पालिका, मुंबई

का संयुक्त उपक्रम

" यौन संचरित संक्रमण तथा गर्भाशय मुख का कर्करोग के बारे में मुंबई के नागरी बस्तीयों में रहनेवाले शादीशुदा जोडीयों के ज्ञान एवं स्वास्थ सुविधा पाने के वर्तम नें सुधारलाने हेतु अभ्यास "

प्रजनन मार्ग और यौन संचरित संक्रमण

(आर.टी.आय् / एस.टी.आय्)

प्रजनन मार्ग / यौन संचरित संक्रमण के विषयपर संदेश।

१. प्रजनन मार्ग और यौन संचरित संक्रमण के विषयपर सही जानकरी के लिये नजदीक के स्वास्थ केन्द्र या डॉक्टर से संपर्क किजिये।

२. यदी पती या पत्नी यौन संचरित संक्रमण से पिडीत है तो पुर्न:संक्रमण से बचने के लिये आप अपनी और अपने साथी की डॉक्टर से चिकित्सा करा लिजिये और जरूरत होने पर इलाज किजिये।

३. यौन संचरित संक्रमण से बचने के लिये निरोध का इस्तेमाल किजिये और जरूरत होने पर समुपदेशक से मिलिये।

४. यौन संचरित संक्रमण से पिडीत व्यक्ती को एच.आय.व्ही. का संक्रमण होने की जादा संभावना होती है।

५. प्रजनन मार्ग और यौन संचरित संक्रमण के विषय पर बिना शरम और बिना डर वार्तालाप किजिये।

प्रजनन मार्ग की बिमारीयाँ क्या होती है ?

प्रजनन मार्ग की बिमारियाँ यह भी एक तरह की यौन बिमारीयाँ होती है। महिला का गर्भाशय, गर्भनलिका, योनि का बाहरी अंग, योनि, गर्भाशय मुख और अंडाशय यह प्रजनन अंग इन बिमारीयों में संक्रमित होते है। बिजांडकोष, बीजवाहक नलिका, गर्भाशय मुख और गर्भाशय इन प्रमुख प्रजनन अंगो को जंतु संक्रमण होना यह भी एक 'पेल्व्हीक इनफ्लामेटरी डिसीज '(PID) नाम की प्रजनन मार्ग की बिमारी है, जिसमे पेट के निचले हिस्से में सुजन आती है। इन बिमारीयों से हमेशा के लिये बांझपन होने की संभावना होती है तथा पैदा होने वाले बच्चे को भी उसका संक्रमण हो सकता है।

प्रजनन मार्ग की बिमारीयाँ तीन मार्ग से प्रभावित होती है।

अ. बाहरी अंगोपर दिखनेवाली बिमारीयाँ - यौन अंगोपर होने वाली बिमारीयाँ

ब. आंतरीक बिमारीयाँ - वैद्यकिय प्रक्रिया द्वारा होने वाली बिमारीयाँ

क. यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ - संभोग द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ

यौन सम्बन्धद्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ क्या होता है ?

व्यक्ति व्यक्तिओं में यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाले जंतु संक्रमण से जो संक्रमित बिमारीयाँ होती है उसे यौन की बिमारीयाँ कहते है। यह बिमारी अतिसुक्ष्म जंतुद्वारा होती है। इस जंतुओं को विषाणु या जीवाणु कहते है। अलग अलग प्रकार के विषाणु तथा जीवाणु द्वारा यौन की बिमारीयाँ होती है। एक से अधिक व्यक्ती से यौन सम्बन्ध रखनेवाले व्यक्ती को तथा यौन बिमारी से पिडीत व्यक्ती के साथ सम्बन्ध रखनेवाले निरोगी व्यक्ति को भी इस बिमारी का संक्रमण होने का अधिक

खतरा होता है। किसी भी प्रकार के लक्षण न दिखने पर तांबी बिठाने के बाद कभी कभी बिना इलाज, यह बिमारीयाँ बढ सकती है। तथा प्रसुती अवस्था में भी बिमारी के लक्षण दिखाई न देने से गर्भ संक्रमित हो जाता है और ऐसे संक्रमण से गर्भाशय का कर्करोग होने की संभावना होती है।

पुरुषों में दिखाई देनेवाले यौन बिमारीयों के लक्षण	*स्त्रियोंमे दिखाई देनेवाले यौन बिमारीयों के लक्षण*
१. लिंगपर दाने तथा फोडा होना।	१. योनिमार्ग में लाल रंग का फोडा तथा दाना निकल आना।
२. मुत्रमार्ग द्वारा स्त्राव तथा पस निकलना।	२. योनिमार्ग से बदबूदार स्त्राव निकलाना।
३. लिंगपर सुजन तथा जांघ में गांठ आना।	३. योनिमार्ग के आजूबाजूमें/जांघ में गांठ निकलना।
४. लिंगपर खुजली तथा यौन सम्बन्ध के समय दर्द होना।	४. योनिपर खुजली तथा यौन सम्बन्ध के समय दर्द होना।
५. पिशाब करते समय जलन होना।	५. पेट के निचले हिस्से में दर्द होना।
६. मुँह मे फोडा, जख्म, जलन तथा छाले निकल आना।	६. पिशाब करते समय जलन होना।
	७. मुँह मे फोडा, जख्म, जलन तथा छाले निकल आना।

प्रजनन मार्ग / यौन संचरित संक्रमण का प्रतिबंध कैसे करोगे ?

- अपने गुप्तांग को हमेशा साफ सुथरा रखिए।
- अपने साथीदार के प्रति निष्ठा रखिए।
- यदी पती या पत्नी यौन संचरित संक्रमण से पिडीत है तो यौन संबंध करते समय हमेशा निरोध का इस्तेमाल किजिए।
- यदी आप यौन संचरित संक्रमण से पिडीत है तो अपने साथीदार का भी सही इलाज करा लिजिए।
- सही मार्गदर्शन के लिये समुपदेशक से संपर्क किजिए।

प्रजनन मार्ग/यौन/संचरित संक्रमण के इलाज के बारे में जरूरी बाते।

- प्रजनन मार्ग/यौन संचरित संक्रमण पूरी तरह से ठिक होने के लिये तज्ञ डॉक्टर द्वारा सही इलाज करा लेना जरूरी है ।
- बिमारी के लक्षण पूरी तरह से मिट जाने पर भी डॉक्टर ने निर्देशित की हुई दवाईयाँ उनके सलाह के बिना बंद नही करनी चाहिए ।
- बिमारी पूरी तरह से ठिक हुई है या नही यह जान लेने के लिये पुन: डॉक्टर की सलाह लेना जरूरी है।
- डॉक्टर के सलाहनुसार दवाईयों की मात्रा निर्देशित समय में पूरी करना जरूरी है।
- गर्भवती महिला को अगर ऐसी बिमारी है तो गर्भ की जाँच करा लेना जरूरी है।

इलाज न करने से क्या हो सकता है ?

पुरूषों में	स्त्रियों में	स्त्री व पुरूष दोनों में
▪ पेशाब करते समय कठिनाई महसूस होती है। ▪ स्वास्थ्य पर गहरा असर होती है।	▪ पेट के निचले हिस्से में सुजन आना और दर्द होना। ▪ बारबार गर्भपात होना। ▪ गर्भाशय के आजुबाजूमें सुजन आना। ▪ गर्भवती महिला के गर्भ में विकलांगता आना।	▪ बांझपन आना । ▪ यौन बिमारीयों से पिड़ीत व्यक्तियों में एच्.आय्.व्ही.की बाधा होने की जोखिम ५ ते २० प्रतिशत जादा होती है।

यौन बिमारीयाँ और उसके लक्षण

१. परमा (गोन्होरिया):	• पुरूषों में मुत्रमार्ग से दुर्गंधीयुक्त पस निकलना। • स्त्रियों में योनि मार्ग से दुर्गंधीयुक्त स्त्राव निकलना। • पेशाब करते समय जलन और दुर्गंधीयुक्त स्त्राव निकलना।
२. ट्रायकोमोनस व्हजायनायटीस:	• स्त्रियों में योनिमार्ग से दुर्गंधीयुक्त स्त्राव निकलना। • स्त्रियों में मासिक स्त्राव अनियमित होना। • स्त्रियों में योनि पर खुजली आना। • स्त्रियों में यौन सम्बन्ध करते समय योनि में दर्द महसूस होना।
३. गरमी (सिफिलिस)	• पुरूषों में लिंग, अंडकोश या गुदद्वारपर जख्म, दाना तथा पस से भरा फोड़ा निकलना। • स्त्रियों में योनि में/योनिपर, गुदद्वारपर जख्म होना। • जांघ में एक या एक से अधिक दर्द या बिना दर्द की गांठ आना। • लिंगपर या लिंग के आजूबाजूमें आतेजाते रहनेवाली सुजन।
४. मृदवण:	• स्त्रियों में पेट के निचले हिस्से में दर्द होना । • स्त्रियों में योनि में/योनिपर गांठ, दाना तथा पस से भरा फोड़ा निकलना। • पुरूषों में लिंगपर एक या अधिक दर्द भरे जख्म होना। • पुरूषों में लिंगपर या लिंग के आजूबाजूमें आनेवाली सुजन।
५. मसा:	• लिंगपर अतिरिक्त मांस बढ़ जाना। • पुरूषों में लिंगपर या लिंग के आजूबाजूमें गांठ आना। • पुरूषों में लिंग से लगातार खून बहना।
६. कोंडीलोमा लॅटा:	• गुदद्वारमें - जख्म होना, फटना, लाल होना, खून निकलना, खुजली, और चट्टा आना
७. ल्युकोप्लाकिया:	• मुहमें - दाग पड़ना, जख्म होना, फटना, लाल होना, खून निकलना, खुजली आना, सुजन आना और फुल जाना।
८. मोनिलियासीस:	• स्त्रियों में योनिमार्ग से दुर्गंधीयुक्त स्त्राव निकलना। • स्त्रियों में अनियमित मासिक स्त्राव। • स्त्रियों में योनि पर खुजली आना। • स्त्रियों में यौन सम्बन्ध करते समय योनि में दर्द महसूस होना।

नवजात बालक और लैंगिक बिमारी।

- गर्भवती महिला को यदी लैंगिक बिमारी हो तो उसके होने वाले बच्चे को भी यह बिमारी हो सकती है। तथा आने वाले बच्चे के स्वास्थ्य पर उसका स्थायी स्वरूप से परिणाम हो सकता है।
- गुप्तरोग का यदी सही इलाज नही किया गया तो होने वाला बच्चा विकलांग या बिमारीयों से पिड़ीत हो सकता है। तथा गर्भपात होने की या मृत बच्चे का जन्म होने की भी संभावना होती है।

यौन सम्बन्धद्वारा फैलनेवाली बिमारीयों के बारे में कुछ गलतफैमियाँ

१. तेल, पेट्रोल, सोडा, निंबू इन चिजों से यौन अवयव साफ करने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक होती है।

२. शिशू या जानवर के साथ यौन संबंध करने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक होती है।

३. हकीम या भगत से इलाज करा लेने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक होती है।

ध्यान रहे यह सभी यौन सम्बन्धद्वारा बिमारीयों के बारे में गलतफैमियाँ है।

पर सच यह है की.....

१. तेल, पेट्रोल, सोडा, निंबू इन चिजों से यौन अवयव साफ करने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक नही होती है, बल्कि इलाज करा लेने में देरी होने के कारण स्वास्थ पर गंभीर परिणाम होते है।

२. शिशू या जानवर के साथ यौन संबंध करने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक नही होती है, बल्कि गैरकानूनन काम किये की सजा जरूर होती है।

३. हकीम या भगत से इलाज करा लेने से यौन सम्बन्ध द्वारा फैलनेवाली बिमारीयाँ ठिक नही होती है, बल्कि सही इलाज न होने से उसके स्वास्थ्य पर गंभीर परिणाम होते है।

आपके जानकारी के लिए.....

राष्ट्रीय प्रजनन स्वास्थ्य अनुसंधान संस्थान और बृहन्मुंबई महानगर पालिका के संयुक्त उपक्रम द्वारा डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर प्रसूतिगृह, टागोर नगर नंबर-७, विक्रोळी (पुर्व) में हर महिने के चौथे गुरूवार को सुबह १०.०० से दोपहर १.०० बजे तक महिलाओं के लिये पॅप स्मिअर परिक्षण शिबिर आयोजित किया जाता है। यह तपास मुफ्त होता है। सभी महिलायें इस परिक्षण का लाभ अवश्य ले। आप भी अपने परिवार के सभी शादीशुदा महिलाओं का पॅप स्मिअर परिक्षण जरूर करा लिजिये और कर्करोग से दूर रहीये।

पॅप स्मिअर परिक्षण क्या है?

कर्करोग जैसी जानलेवा बिमारी तथा कुछ योन बिमारीयों के लक्षण प्राथमिक रूप में दिखाई नही देते है, पर पॅप स्मिअर परिक्षण से प्राथमिक अवस्थामेंही बिमारीयों का निदान किया जाता है। कर्करोग या कर्करोग के पुर्वस्वरूप सुक्ष्म बदलाव तथा जंतुसंसर्ग के कारण होनेवाली योन बिमारीयों का निदान यह परिक्षण से किया जाता है। १८ से ४५ उम्र की सभी शादीशुदा महिलाओंने यह परिक्षण दो साल में कम से कम एक बार करा लेना जरूरी है।

यह परिक्षण कैसे किया जाता है?

यह परिक्षण सरल तथा वेदनारहित है। महिलाओं का विशेष परिक्षण करते समय योनीमार्ग से रूई के फुरेरी या ब्रश से पेशीयुक्त पानी निकालकर कांचपट्टी के उपर लेते है। प्रयोगशाला में इस पर विशेष रासायनिक प्रक्रिया करके सुक्ष्मदर्शक यंत्र से परिक्षण करते है। पॅप स्मिअर परिक्षण यह एक आसानी से होनेवाला परिक्षण है, ऑपरेशन नही । यह परिक्षण करते समय महिला को कोई दर्द या तकलीफ नही होती है। परिक्षण को तीन मिनीट का समय लगता है। महावरी (मासिक धर्म) के दिनों के अलावा कभी भी यह परिक्षण किया जा सकता है।

पॅप स्मिअर परिक्षण के फायदे :

- नियमित पॅप स्मिअर परिक्षण करा लेने से कर्करोग के प्राथमिक अवस्था में या पूर्वरूप में निदान और जल्द ही उपचार होने के कारण कर्करोग से होनेवाली पीडा तथा मृत्यू टल सकती है।
- पॅप स्मिअर परिक्षण से योन बिमारीयों का निदान और उपचार तुरंत होने से भविष्य में होने वाले गंभीर परिणामों को रोका जा सकता है।